International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 2, February- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

विवाह का विकल्प : लिव–इन–रिलेशनशीप सामाजिक सम्बन्धों से तटस्थता का बीजारोपण

डा0 अनुजा अमेरी
यू0जी0सी0नेट, पी0एच0डी0 (समाजशास्त्र)

आवश्यकता एवं जरूरत ने हमेशा से मानव समाज को उसका समाधान ढूढने को बाध्य किया है। आवश्यकता की पूर्ति न होने पर जहॉ एक ओर मन में असंतोष पैदा करती हैं, वही दूसरी ओर इसका प्रभाव कही न कहीं व्यक्ति के रचनात्मक उत्पादक व क्रियात्मक उर्जा पर भी पड़ता हैं। जो हमारे गतिशील जीवन के रफ्तार को अपेक्षाकृत धीमा बना देती हैं। समय की रफ्तार के साथ हम सभी प्रतिस्पर्द्धा में लगे हैं और बुलदियों और सफलता के चरमोत्कर्ष को
छू लेने को व्याकुल हैं। इसी सफर में सम्मिलित आज के युवा अपने पैर जमाने और नौकरी की तलाश में अपने घर–परिवार से दूर रहने को बाध्य है। अनजाना शहर रिश्ते नातों से दूरी ओर फुर्सत के पलों में अपनापन के एहसास की जरूरत युवा मन को एक हमसफर के लिए व्यग्र और विचलित कर ही देता है। पर कैरियर बनाना हैं, इसलिए घर बसाने की बात सोंचना भी फिजूल है। परिवर्तन के इस युग में मानव की नीजी जरूरते अपेक्षाकृत पहले से बढ गई है। फिर बिना अपने पर निर्भर हुए कोई लड़की विवाह करना चाहेगी भी नहीं। इसलिए आत्मनिर्भर होना प्रत्येक युवा की प्राथमिकता बन गई हैं और युवतियॉ भी विवाह से पूर्व आत्मनिर्भरता को महत्व दे रही है। इसलिए युवतियों के प्रति सीमा रेखा तक रहने का बैरियर भी समझदार मॉ–बाप तोड़ उन्हें जीवन में आगे बढने के हौसले को पराश्रय दे रहे हैं। लडकिया भी लडको की तरह प्रदेश में कभी उच्च शिक्षा प्राप्त करने तो, कभी नौकरी या अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य से घर परिवार से दूर रह रही हैं। ऐसे में स्वतंत्र विचार को पनपने का भरपूर सहयोग मिलता हैं। लिव–इन–रिलेशनशिप ऐसे ही वातावरण में पनपा सम्बन्ध है जो विवाह जैसी संतुष्टि को युवा जोडा बिना विवाह किए गुजारता है। पर इसमें जीवन भर साथ निभाने का ना कोई वचन होता हैं ना ही इससे अलग होने के लिए तलाक जैसी प्रक्रिया से गुजरना। इस प्रकार लिव–इन–रिलेशनशिप दो स्वस्थ मष्तिष्क वाले वयस्क जोडा का एक साथ एक ही छत के नीचे बगैर विवाह अपनी मर्जी से पति पत्नी जैसे रहने वाले सम्बन्ध का नाम है।

<u>प्रश्न है कि लिव–इन–रिलेशनशीप को क्यों अपना रहे है युवा</u>

ग्लोबलाईजेशन डिजिटल माध्यमों (मोबाईल कम्प्यूटर, रेडियों, टेलीविजन ठत्यादि) व व्यक्तिगत सम्पर्क और विचारों में आया खुलावन ने लोगो की सोंच का दायरा को विस्तृत किया है। अब पारिवारिक व सामाजिक स्तर से बढकर व्यक्ति की सोंच विश्व स्तर पर हो गई हैं। व्यक्ति के विचारों मे काफी स्वतंत्रता आ गई जिसे न समाज नियंत्रन कर पा रहा न ही परिवार। इसलिए अपनी संतुष्टि के लिए प्रत्येंक व्यक्ति विश्व स्तर पर मौजूद विकल्पों का सहारा ले रही हैं। कोई भी पुराने बैरियर जो व्यक्ति के उत्रति में बाधक हो व्यक्ति उसे त्याग कर आगे बढना चाहता है। ऐसा नहीं करने पर वह समय से पीछे रह जाएगा। जब लक्ष्य प्राप्ति का दायरा विश्व स्तर पर हो गई हैं तो, विचारो का दायरा में अपने गॉव, शहर या राज्य तक ही सीमीत कैसे रह सकता है।

युवा द्वारा लिव–इन–रिलेशनशीप को अपनाने के कई कारण हैं :–*युवाओं की उच्च महत्वाकांक्षा लिभ–इन–रिलेशनशिप को खुब फलने –फूलने का मौका दे रही हैं। विवाह बंधन एक सामाजिक व पारिवारिक उतरदायित्व को पूरा करने का बंधन हैं। इसमें देह–सुख से बढ कर कुछ सामाजिक व पारिवारिक अपेक्षा को भी पूरा करना पडता है। जैसे विवाहोपरांत बच्चों को जन्म देने की बाध्यता का दबाव। साथ ही, अनदेखा करने पर तरह–तरह के अटकलों का मानसिक दबाव । ऐसी परिस्थितियें से बचने के लिए आज के युवा लिभ–इन में आ जाते है जिसमें विवाहोपरांत मिलने वाली संतुष्टि तो मिलती रहती हैं, पर अन्य दायित्वों व दबाव से मुक्ति रहती है। इस कारण वे भविष्य को बेहतर तरीके से संवारने में समय दे पाते हैं। चुंकि इस रिलेशनशिप में युवाओं की शारीरिक व मानसिक जरूरत की पूर्ति*

आसानी से हो जाती हैं, इसलिए उन्हें विवाह की आवश्यकता महसूस ही नहीं होती । चुंकी सपने पूरा करना हैं, बुलंदियों को छूना हैं, उसे पूरी करने की स्वतंत्रता लिभ–इन–रिलेशनशिप में पूरी तरह मिलती है। वैवाहिक सुख जैसा आनंद के साथ आज के युवा अपने उपलब्धियों को दबाव मुक्त होके पाने को प्रयासरत हैं। इसलिए लिभ–इन–रिलेशनशिप को शादी के विकल्प के रूप में प्राथमिकता देते है।

जिन्दगी के प्रति व्यवसायिक दृष्टिकोण :– *आज के युवा जिन्दगी को एक व्यवसायिक दृष्टिकोण से देखते हैं, जिसमें फायदा–नुकसान का आकलन किया जाता है। लिव–इन–रिलेशनशिप का रिश्ता अपने घर–परिवार से दूर रहने पर ही ज्यादातर पनपता हैं, क्योंकि वहॉ उनपर दबाव बनाने बाला कोई नहीं होता हैं। प्रदेश मे रहने के लिए आवास की समस्या आती हैं। खर्चे का वहन करना पडता हैं। अपना कहनेवाला कोई नहीं होता, इसलिए एक साथी को आवश्यकता होती है। ऐसे में सह–साथी जो एक ही इरादे से प्रदेश में संधर्ष करते है या साथ काम करते हैं लिव–इन का सहारा लेते हैं। जिससे उनको साझेदारी में खर्चो को कम वहन करना पडें। चुकि दो युवा मस्तिष्क एक साथ रहते है, तो जरूरते भी एक जैसी होती है। ऐसे में वे भयमुक्त हो स्वेच्छा से अपनी शारीरिक जरूरते भी पूरी करने लगते है। चुॅकी यह एक समझौता की तरह होता हैं इसलिए साथ रहने की मर्जी न होने पर इच्छा से अलग होने की भी स्वतंत्रता होती है।*

दाम्पत्य बन्धन को टिकाउ बनाने के लिए– *कई बार युवा जोड़ा अपने विवाह सम्बन्ध की प्रगाढता को जॉचने के लिए भी लिव–इन रिलेशनशीप को अपनाते हैं। उनका प्रेम–सम्बन्ध विवाहोपरांत कितना बना रहेगा इसकी परख वे लिभ– इन–रिलेशनशिप में रहकर करते हैं। अगर साथ रहने पर प्यार में कोई परिवर्तन,दिक्कत या समस्या नहीं आई तो वो इसे विवाह का रूप देते हैं। अन्यथा वो अपने रास्ते यह सोंचकर अलग कर लेते हैं, कि उनका विवाह सम्बन्ध टिकाउ नहीं हो सकता। इस तरह अपनें प्रेम सम्बन्ध को अच्छे से समझने के जरिया के रूप में युवा लिभ–इन–रिलेशनशिप को अपनाते है।*

परिवारवालों की रजामन्दी नहीं मिलने पर– *एक ही क्षेत्र में काम करने या अन्य डिजिटल माध्यमों के सम्पर्क से कभी–कभी युवा जो भावनात्मक रूप से जुड़ जाते हैं। ऐसे में वे एक दूसरे से सदैव के लिए विवाह बंधन में बंध कर जीना चाहते हैं। पर परिवार वाले उनके इस चुनाव को स्वीकार नहीं करते हैं तो युवा जोडा लिभ–इन–रिलेशनशिप में रहने लगते हैं। चुकि ऐसे जयादातर जोड़े आर्थिक रूप से निर्भर होते हैं, इस लिए इस रिलेशनशिप को अपनाने में परिवार भी बाधक नहीं बन पाता।*

कानूनी वैधता मिल जाने के कारण *– जबतक सामाजिक व पारिवारिक नियंत्रन विवाह के बाद यौन–सम्बन्ध को मान्यता देती थी लिभ इन रिलेशनशिपव हमारे देश के जीवन शैली से दूर थी। पर विदेशी संस्कृति के प्रभाव और सुप्रीम कोर्ट द्वारा इसे कानूनी वैधता प्रदान किए जाने के कारण आज के युवा इसे बगैर खौफ अपना रहे हैं। अध्ययन और रोजगार की तलाश में युवा अपने घर परिवार से काफी दूर रहते हैं। ऐसे में अपनी यौनेच्छा की पूर्ति के लिए एक साथी तलाश लेते है और लिभ–इन–में रहने लगते है। चुकी इसे अपनाने या छोडने के लिए किसी कानूनी प्रक्रिया से गुजरने की जरूरत नहीं होती, इसलिए आज के युवा इसे अपनाने में कोई संकोच नहीं करते है।*

अभिनेता–अभिनेत्री के आइकन बनने के कारण– *ऐसे तो भूमंडलीकरण ने पूरे विश्व को एक सूत्र में पिरो दिया हैं, जिस वजह से हमारे आन्तरिक –बाहरी हर तरह के जीवन व्यवहार में परिवर्तन आया हैं। अच्छाईयॉ और बुराइयों का सहज भाव से आदान–प्रदान हो रहा हैं, उन प्रभावों में एक है–– लिभ–इन– रिलेशनशिप, जो भारतीय सिनेमा दुनिया का हिस्सा बन गई हैं। हिरो–हिरोइन आज के युवाओं के लिए एक फैशन आईकन का काम करते हैं। इसलिए वे व्यवहार के जो तरीके भी अपनाते हैं, हमारे युवा उसका बगैर मनन किए अनुकरन करने लगते हैं। आए दिन अभिनेताओं–अभिनेत्रियों के लिव–इन– रिलेशनशिप में रहने की खबरे आती रहती हैं जिसका असर युवाओं के मस्तिष्क पर पड़ता हैं। चुकी फिल्मी दुनिया का प्रत्येंक ट्रेड को अपनाना युवा अपनी आधुनिकता से जोड़ कर देखते हैं, इसलिए लिभ इन को अपनाने के स्थाल से वो अपने को रोक नहीं पाते।*

संवंधित मुद्दे से जुड़ी फिल्म और उन्माद पैदा करने वाले दृश्यों का प्रभाव :– *समय के साथ–साथ फिल्मों में प्रेम प्रदर्शन के दृश्यों में काफी परिवर्तन आया हैं। शायद सेंसर बोर्ड की कैंची अब उतनी पैनी नहीं रह गई हैं जितना पहले हुआ करती थी। उत्तेजक दृश्यों को कहानी की जरूरत की दलील देकर हरी झण्डी दिखा दी जाती है। चुकी फिल्में देखना सिनेमा हॉल तक ही सीमित नहीं रह गई है। बल्कि*

अन्य डिजिटल माध्यमों द्वारा भी इसे कहीं भी देखने की सुविधा हो गई हैं। फिल्मों मे उतेजक दृश्यों का प्रदर्शन युवा मंस्तिष्क पर पूरा असर डालती है और उसे न सिर्फ बार बार देखना पसन्द करते है। बल्कि एक साथी की जरूरत भी महसूस करने लगते हैं। ऐसे में वे सरल और सहज रास्ता लिभ–इन–रिलेशनशिप को अपनाते है।

समाजिक व पारिवारिक नियंत्रण में कभी – *व्यक्ति के विचारों में परिवर्तन आने के कारण सामाजिक व परिवारिक मानदण्ड व मूल्य अपेक्षाकृत पहले से काफी कमजोर हो गई हैं। जिसकी वहज हैं – सामाजिक व पारिवारीक स्तर पर व्यक्ति को अवश्यकता पूरी होने वाले कार्यो को व्यवसायिक क्षेत्रों द्वारा अपनाया जाना। यही कारण है कि जिन विवशता के चलते व्यक्ति परिवार व समाज का विरोध नहीं कर पाता था, आज उससे आजाद हो गया हैं। ऐसे में पारिवारिक व सामाजिक स्तरों पर व्यक्ति पर लगाए जाने वाले नियंत्रण स्वयंमेव निष्प्रभावी हो गए है। इसी वजह से युवा लिभ इन रिलेशनशिप को अपना रहे है।*

व्यक्तिगत निर्णय को महत्व– *शिक्षा के प्रभाव से सामाजिक व पारिवारिक स्तरों पर जीवन आदर्श के मूल्यों मे काफी परिवर्तन आया हैं। पहले सामाजिक व पारिवारिक मूल्यों को प्राथमिकता देने के बाद व्यक्तिगत महत्व को सोंचा जाता था। पर अब व्यक्तिगत संतुष्टि को ज्यादा महत्व दिया जाने लगा हैं। वयक्तिगत हित को प्राथमिकता दिए जाने के कारण सामाजिक व पारिवारिक हित का महत्व गौण हो गया हैं, जिस कारण युवा लिभ–इन–रिलेशनशिप को अपना रहे हैं*

विवाह की आयु सीमा का बढ जाना – *कानूनी रूप से लडको व लड़की के विवाह की आयु सीमा 21 व 18 हैं। पर बदलते युग में विवाह से पूर्व स्वालम्बन एक जरूरत बन गई हैं। अब ''लोग क्या कहेंगे'', ऐसी धारणा लगभग टूट–सी गई हैं। युवक–युवतिया विवाह से पूर्व आत्मनिर्भरता को प्राथमिकता देते है। परिवार भी अपना निर्णय बच्चों पर नहीं डालते है। इसी प्रयास में युवक–युवतियॉ उम्र की परिपक्वता को प्राप्त कर लेते हैं। शारीरिक जरूरत प्रत्येक युवा महसूस करता है। और साथ ही लिव–इन–रिलेशानशीप के वैश्विक प्रभाव उन्हें इसे स्वीकार लेने में समर्थन देती हैं। इसलिए उनकी परिपक्वता व जरूरत दोनों ही लिभ–इन–रिलेशनशीप में रहने की सहमति देती है।*

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट पता चलता है कि लिव–इन– रिलेशनशिप आज की व्यस्त व प्रतियोगी समय की जरूरत है। जिसे कि परिस्थितियों ने पैदा किया है। युवा व्यग्र मन की बेखौफ अपनाया जानेवाला निर्णय का नतीजा है–– लिभ–इन–रिलेशनशिप । लिव–इन–रिलेशनशिप विवाह जैसी संस्था का विकल्प के रूप में हमारे समक्ष उभर आया हैं, जिसे चाह कर भी समाज से अलग नहीं किया जा सकता । लिव इन रिलेशन शिप व्यवहार नियंत्रण के सभी संस्थाओं के शिथिल होने का स्पष्ट प्रमाण हैं। इसने अपने प्रभाव से आज की युवा पीढ़ी को पुरानी मान्यता तोड़ने का हौसला तो दिया ही हैं, साथ ही समाजिक संबधों के पारम्परिक आधार से तटस्थता करने का बीजारोपण भी कर दिया है।

संदर्भ सूची

www.gaide2india.org

call in karan Redio (Love & live in relationship)

Film ashiqui-2

स्माजशास्त्र- एस०एस०पाण्डेय

लिव इन की ओर बढ़ता भारत - ***m.dw.com***

लिव इन पार्टनर को शादीशुदा दंपति की मान्यता- m.dw.com